भाकृअनुप - केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक 753 006

कृषि सलाहकार सेवा

अगस्त 2025 के द्वितीय पखवाड़े की रणनीतियाँ

प्रतिरोपित धान

- अगस्त के दूसरे पखवाड़े तक धान की रोपाई पूरी कर लेनी चाहिए।
- मध्यम और लंबी अवधि वाली किस्मों के लिए, खेत को अंतिम बार कीचड़दार बनाने के समय आधारी मात्रा के रूप में 4 किलो यूरिया + 35 किलो डीएपी + 27 किलो एमओपी या 18 किलो यूरिया + 100 किलो एसएसपी + 27 किलो एमओपी प्रति एकड़ की दर से डालें। रोपाई के 30 दिन बाद पहली टॉप ड्रेसिंग के रूप में 36 किलो यूरिया और बाली निकलने की अवस्था में दूसरी टॉप ड्रेसिंग के रूप में 18 किलो यूरिया डालें (*उर्वरक की अनुसंशित मात्रा 32-16 किलो एनपीके/एकड़ है और नाइट्रोजन 25% मूल, 50% दौजी निकलने पर और 25% बाली निकलने की अवस्था पर डालें)
- कम अवधि वाली किस्मों के लिए, खेत को अंतिम बार कीचड़दार बनाने के समय 21 किग्रा यूरिया + 35 किग्रा डीएपी + 27 किग्रा एमओपी या 27 किग्रा यूरिया + 100 किग्रा एसएसपी + 27 किग्रा एमओपी प्रति एकड़ मूल मात्रा के रूप में डालें। रोपाई के 25-30 दिन बाद 27 किग्रा यूरिया टॉप ड्रेसिंग के रूप में डालें (*उर्वरक की अनुसंशित मात्रा 32-16 किग्रा एनपीके/एकड़ है और नाइट्रोजन 50% मूल और 50% टॉप ड्रेसिंग के रूप में डालें)।
- संकर किस्मों के लिए, खेत को अंतिम बार कीचड़दार बनाने के समय 32 किग्रा यूरिया + 53 किग्रा डीएपी + 40 किग्रा एमओपी या 52 किग्रा यूरिया + 150 किग्रा एसएसपी + 40 किग्रा एमओपी मूल मात्रा के रूप में डालें। रोपाई के 30 दिन बाद पहली टॉप ड्रेसिंग के रूप में 26 किग्रा यूरिया और बाली बनने की प्रारंभिक अवस्था में दूसरी टॉप ड्रेसिंग के रूप में 26 किग्रा यूरिया डालें (*आरडीएफ 40-24 किग्रा एनपीके/एकड़ है और नाइट्रोजन 50% मूल, 25% दौजी निकलने के समय और 25% बाली निकलने की अवस्था पर डालें)।
- जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में, अंतिम भूमि तैयारी के समय जिंक सल्फेट 10 किग्रा/एकड़ या जिंक-ईडीटीए 6 किग्रा/एकड़ (दो वर्ष में एक बार) डालें। यदि अंतिम भूमि तैयारी के दौरान जिंक सल्फेट ($ZnSO_4$) नहीं डाला गया है, तो धान की रोपाई के 30 और 45 दिन बाद 0.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से जिंक-ईडीटीए का छिड़काव करें या खेत में कमी के लक्षण दिखाई देने पर 0.5% $ZnSO_4$ घोल (एक एकड़ में 200 लीटर पानी में 1 किग्रा $ZnSO_4$ + 0.5 किग्रा चूना) का 15 दिनों के अंतराल पर तीन बार छिड़काव करें।

- बोरॉन की कमी वाली मिट्टी में, अंतिम भूमि की तैयारी के समय 2 किलो प्रति एकड़ की दर से बोरेक्स डालें।
- एक ही खेत से अलग किए गए पुराने पौधों से खाली स्थानों को भरें ताकि प्रति वर्ग मीटर 33 पौध प्रति पूंजा की संख्या बनी रहे।
- मृदा स्वास्थ्य कार्ड धारक किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपने कार्ड में उल्लिखित सिफारिशों का पालन करें।
- 25-30 दिनो वाली पौध की रोपाई 20x15 सेमी की दूरी पर उथली गहराई पर करनी चाहिए, प्रति पूंजा 2-3 पौध का प्रयोग करें। संकरों के लिए प्रति पूंजा केवल 1-2 पौध का प्रयोग करें।
- विलंबित रोपाई के लिए, पुरानी पौध को उथली गहराई पर 15x15 सेमी की कम दूरी पर, प्रति पूंजा 4-5 पौध लगाकर, मिट्टी में रोपें।
- खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 5-10 दिनों के भीतर दानेदार शाकनाशी बेनसल्फ्यूरॉन मिथाइल 0.6% + प्रीटिलाक्लोर 6% जीआर 4 किग्रा/एकड़ की दर से 4 किग्रा रेत के साथ मिलाकर या बिसपायरीबैक सोडियम 10% एससी 120 मिली / एकड़ की दर से 16 लीटर क्षमता के 8 टैंकों में डालें। खरपतवार के उभरने के 8-10 दिनों के बाद (या जब खरपतवार 2-3 पत्ती अवस्था में हों) छिड़काव या रोपाई करने के 15-20 दिन बाद तैयार मिक्स पेनॉक्सुलम + साइहालोफॉप ब्यूटाइल (विवाया) 900 मिली/एकड़ की दर से या रोपाई के 15-20 दिन बाद टैंक मिक्स फेनोक्साप्रोप-पी-एथिल + एथोक्सीसल्फ्यूरॉन (राइस स्टार + सनराइज) 240+50 ग्राम प्रति एकड़ की दर से 16 लीटर क्षमता वाले स्प्रेयर के 8 टैंकों में छिड़काव करें।
- शीघ्र रोपाई की गई धान में यदि थ्रिप्स की समस्या देखी जाती है, तो किसान नीम के बीज की गिरी आधारित कीटनाशक जैसे कि अज़ाडिराक्टिन 0.15% 1 लीटर/एकड़ की दर से या लैम्बडासाइहालोथ्रिन 5% ईसी 100 मिली/एकड़ की दर से या थियामेथोक्सम 25% डब्ल्यूजी 40 ग्राम/एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में छिड़काव कर सकते हैं।
- भूरा पौध माहू (बीपीएच) आक्रांत क्षेत्रों में, प्रत्येक 8-10 पंक्तियों की रोपाई बाद एक पंक्ति छोड़ दें।
- तना छेदक आक्रांत वाले क्षेत्रों में, अंडा परजीवी ट्राइकोग्रामा जैपोनिकम 5०००० अंडे/एकड़ (३ कार्ड/एकड़) साप्ताहिक अंतराल पर तब तक छोड़ें जब तक कि कीटों की संख्या अधिक न दिखाई दे।
- तना छेदक, पत्ती फोल्डर और अन्य वयस्क कीटों को आकर्षित करने और उन्हें मारने के लिए 1/एकड़ की दर से प्रकाश जाल लगाएं।
- तना छेदक और पत्ता मोड़क फोल्डर के संक्रमण की निगरानी के लिए 3 फेरोमोन ट्रैप/एकड़ रखें। जब भी नर कीट/जाल की संख्या 4 या 5 तक पहुँच जाए, तो अजाडिरक्टिन 0.15% ईसी 800 मिली/एकड़ दर पर या क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 4% जीआर 4 किग्रा/एकड़ 1:1 के अनुपात में रेत के

साथ मिलाकर या क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5% एससी 60 मिली/एकड़ 200 लीटर पानी दर पर या कार्टैप हाइड्रोक्लोराइड 4जी 10 किग्रा/एकड़ दर पर या फ्लूबेनडियामाइड 20 डब्ल्यूजी 50 ग्राम/एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

- जब भी दो मुड़ी हुई पत्तियां/पूंजा दिखाई दें तो पत्ता मोड़क को नियंत्रित करने के लिए क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5% एससी 60 मिली/एकड़ दर पर या फ्लूबेंडियामाइड 20 डब्ल्यूजी 50 ग्राम/एकड़ या, करटाप हाइड्रोक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी 400 ग्राम/एकड़ दर से या टेट्रानिपोल 200 ईसी 100-120 मिली/एकड़ 200 लीटर दर से पानी मिलाकर छिड़काव करें।
- यदि दौजी निकलने की अवस्था में आच्छद अंगमारी प्रकोप देखा जाता है, तो टेबुकोनाज़ोल 50% + ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% डब्ल्यूजी 0.4 ग्राम या प्रोपिकोनाजोल 75% 1 मिली प्रति लीटर पानी दर पर या हैक्साकोनाजोल 50% 2 मिली प्रति लीटर पानी दर पर या वालिडामाइसिन 3 एल 2 मिली/लीटर दर पर छिड़काव करें। इस छिड़काव को 7-10 दिनों के अंतराल पर दोहराएं। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।
- जीवाणुज अंगमारी /जीवाणुज पत्ता अंगमारी होने की स्थिति में, प्लांटोमाइसिन 1 ग्राम / लीटर दर पर एवं इसके साथ कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 1 ग्राम / लीटर पानी में 200 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें। यदि पत्ता प्रध्वंस देखा जाता है, तो टेबुकोनाज़ोल 50% + ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% डब्ल्यूजी 0.4 ग्राम या रोग को नियंत्रित करने के लिए कार्बेन्डाजिम 50 डब्लयूपी 2 ग्राम/लीटर पानी में मिलाकर प्रयोग किया जा सकता है अन्यथा, बेल (25 ग्राम ताजी पत्तियां) या तुलसी (25 ग्राम ताजी पत्तियां) या नीम (200 ग्राम ताजी पत्तियां) के पत्तों के निचोड़ को प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने से रोग की प्रकोप को कम करने में मदद मिल सकती है।